C. S (M) 2012

CS(M) EXAM 2012

Serial N

G-DTN-M-IJOB

HINDI

Paper—II

(Literature)

Time Allowed : Three Hours | *Maximum Marks : 300*

INSTRUCTIONS

*Candidates should attempt Question Nos. 1 and **5** which are compulsory, and any **THREE** of the remaining questions, selecting at least **ONE** question from each Section.*

The number of marks carried by each question is indicated at the end of the question.

*Answers must be written in **Hindi.***

Important : Whenever a Question is being attempted, all its parts/sub-parts must be attempted contiguously. This means that before moving on to the next Question to be attempted, candidates must finish attempting all parts/sub-parts of the previous Question attempted. This is to be strictly followed.

Pages left blank in the answer-book are to be clearly struck out in ink. Any answers that follow pages left blank may not be given credit.

SECTION—A

1. निम्नलिखित कवितांशों की सप्रसंग व्याख्या करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य और प्रासंगिकता के आयामों का उद्घाटन कीजिए :—

12×5=60

(क) अंतरजामिहुतें बड़े बाहरजामि हैं राम, जे नाम लियेतें।
धावत धेनु पेन्हाइ लवाइ ज्यों बालक-बोलनि कान कियेतें।
आपनि बूझि कहै तुलसी कहिबे की न बावरि बात बियेतें।
पैज परें प्रहलादहु को प्रगटे प्रभु पाहन तें, न हियेतें।।

(ख) सो गढ़ देखु गँगन तें ऊँचा। नैन देख कर नाहिं पहूँचा।
बिजुरी चक्र फिरै चहुँ फेरी। औ जमकात फिरै जय केरी।
धाइ जो बाजा कै मन साधा। मारा चक्र भएउ दुइ आधा।
चंद सुरुज औ नखत तराई। तेहि डर अँतरिख फिरैं सबाई।
पवन जाइ तहँ पहुँचै चहा। मारा तैस टूटि भुइँ बहा।
अगिनि उठी जरि बुझी निआना। धुआँ उठा उठि बीच बिलाना।
पानि उठा उठि जाइ न छुवा। बहुरा रोइ आइ भुँइ चुवा।
रावण चहा सौंह होइ हेरा उतरि गए दस माँथ।
संकर धरा ललाट भुइँ औरु को जोगी नाथ।।

(ग) बीती नहीं यद्यपि अभी तक है निराशा की निशा—
है किन्तु आशा भी कि होगी दीप्त फिर प्राची दिशा।
महिमा तुम्हारी ही जगत में धन्य आशे ! धन्य है,
देखा नहीं कोई कहीं अवलम्ब तुम-सा अन्य है।।
आशे, तुम्हारे ही भरोसे जी रहे हैं हम सभी,
सब कुछ गया पर हाय रे ! तुमको न छोड़ेंगे कभी।
आशे, तुम्हारे ही सहारे टिक रही है यह मही,
धोखा न दीजो अन्त में, बिनती हमारी है यही।

(घ) ये गरजती, गूँजती आन्दोलिता
गहराइयों से उठ रहीं ध्वनियाँ, अत:
उद्भ्रान्त शब्दों के नये आवर्त में
हर शब्द निज प्रति-शब्द को भी काटता,
'वह रूप अपने बिम्ब से ही जूझ
विकृताकार-कृति
है बन रहा
ध्वनि लड़ रही अपनी प्रतिध्वनि से यहाँ'।

(ङ) दिल ने कहा—दलित माओं के
सब बच्चे अब बागी होंगे
अग्निपुत्र होंगे वे, अंतिम
विप्लव में सहभागी होंगे
दिल ने कहा—अरे यह बच्चा
सचमुच अवतारी वराह है
इसकी भावी लीलाओं का
सारी धरती चरागाह है

2. (क) सूरदास की भक्तिभावना और काव्य-कौशल का परिपाक भ्रमरगीत प्रसंग में किस तरह हुआ है ? विश्लेषण कीजिए।

(ख) बिहारी के काव्य एवं उनकी कवि-दृष्टि की सौंदर्यशास्त्रीय मीमांसा के प्रतिमानों पर प्रकाश डालिए। 30×2=60

3. (क) तुलसी और जायसी की काव्य-भाषा और संवेदनात्मक गहनता का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत कीजिए।

(ख) "कबीर की कविता में प्रेम केवल संवदेना ही नहीं, अवधारणा के रूप में भी है। वह केवल राम के विरह का ही नहीं, कवि के सामाजिक विवेक का भी प्रतिमान है" —इस कथन की पुष्टि कीजिए। 30×2=60

4. (क) समकालीन दौर में भी मुक्तिबोध की कविता का पुनर्पाठ लगातार हो रहा है। समकालीन कविता में मुक्तिबोध की कविता किस तरह संस्थित है ?

(ख) आज के संदर्भ में 'भारत-भारती' का विवेचन कहाँ तक संगत प्रतीत होता है ? विवेचन कीजिए। 30×2=60

SECTION—B

5. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या करते हुए उनके रचनात्मक सौंदर्य का उद्घाटन कीजिए :— 12×5=60

(क) मनुष्य-समाज समय की नदी के तट पर स्थित वन के समान है। समय की नदी में आने वाले प्लावन इस वन की भूमि को उर्वरा करते रहते हैं। इसी प्रकार सागल के नगर-समाज में परिवर्तन के अनेक प्लावन आये और भावनाओं और अनुभूतियों के उर्वर स्तर समाज की भूमि पर छोड़ते गये।

(ख) जिस सौंदर्य की भावना में मग्न होकर मनुष्य अपनी पृथक सत्ता का विसर्जन करता है वह अवश्य एक दिव्य विभूति है। भक्त लोग अपनी उपासना या ध्यान में इसी विभूति का अवलंबन करते हैं।

(ग) लीड काइण्डली लाइट . . . संगीत के सुर मानो एक ऊँची पहाड़ी पर चढ़कर हाँफती हुई साँसों को आकाश की अबाध शून्यता में बिखेरते हुए नीचे उतर रहे हैं। बारिश की मुलायम धूप चैपल के लंबे चौकोर शीशों पर झिलमिला रही है, जिसकी एक महीन चमकीली रेखा ईसा-मसीह की प्रतिमा पर तिरछी होकर गिर रही है।

(घ) पर मुझसे कुछ नहीं बोला जाता। बस, मेरी बाहों की जकड़ कसती जाती है; कसती जाती है। रजनीगंधा की महक धीरे-धीरे तन-मन पर छा जाती है। तभी मैं अपने भाल पर संजय के अधरों का स्पर्श महसूस करती हूँ, और मुझे लगता है, यह स्पर्श, यह सुख, यह क्षण ही सत्य है, वह सब झूठ था, मिथ्या था, भ्रम था . . . . ।

(ङ) जन-सागर इस घोषणा के झंझावात से तरंगित हो उठा। जन-समूह की ग्रीवायें उठ गयीं और दृष्टि मार्ग के पश्चिम छोर की ओर चली गयी। दीपदण्ड-धारी अश्वारोहियों के पीछे रथ चले आ रहे थे और रथों के पीछे फिर दीपदण्ड-धारी अश्वारोही। रथ शीघ्र ही मण्डप के समीप जन-प्रवाह में आ पहुँचे।

6. (क) ललित निबंधों में वैचारिक पक्ष किस तरह लालित्य में घुलमिल जाता है ? समीक्षा कीजिए।

(ख) भारतेंदुयुगीन निबंधों की वैचारिकता कितनी गहन और गंभीर रही है ? विचार कीजिए। $30 \times 2 = 60$

7. (क) हिन्दी उपन्यास की आधुनिकता की चर्चा 'गोदान' से शुरू होती है। देसी आधुनिकता के कौन-कौनसे तत्त्व 'गोदान' को आधुनिक सिद्ध करते हैं ? स्पष्ट कीजिए।

(ख) आधुनिक मनुष्य की त्रासदी को मोहन राकेश कालिदास, मल्लिका एवं विलोम के माध्यम से किस हद तक व्यक्त कर पाए हैं ? विचार कीजिए। 30×2=60

8. (क) 'दिव्या' में यशपाल का वैचारिक हस्तक्षेप उपन्यास के रचना-कौशल का अतिक्रमण करता है—इस मत का विश्लेषण प्रस्तुत कीजिए।

(ख) 'मैला आँचल' की आँचलिकता उपन्यास की वस्तु-स्थिति में विचलित होती है या स्थानीयता ही बनी रहती है ? समीक्षा कीजिए। 30×2=60